प्रेरणादायक नेतृत्व के लिए परमात्म शक्तियों एवं वरदानों की प्राप्ति विषय पर आयोजन

नेताओं के लिए योग, ध्यान और साधना ज़रूरी: सिन्हा

शांतिवन-आनंद सरोवर। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के आनंद सरोवर परिसर में राष्ट्रीय राजनीतिक सम्मेलन में 'परमात्म शक्तियों एवं वरदानों की प्राप्ति' विषय पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें देशभर से राजनेता, जनप्रतिनिधि, पार्टियों के पदाधिकारियों ने भाग लिया।

बिहार विधानसभा के नेता प्रतिपक्ष विजय कुमार सिन्हा ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञान से हमें

मानसिक शांति मिलती है। इससे सुख-शांति का मार्ग प्रशस्त होता है।

पहले खुद पर राज़ करना होगा...

उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर से आए भाजपा अनुसूचित मोर्चा के राष्ट्रीय महामंत्री और सांसद डॉ. भोला सिंह ने कहा कि यहां मंत्र दिया जाता है कि यदि हमने अपने आप पर राज कर लिया तो हम दुनिया पर राज कर सकते हैं। मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने आशीर्वचन दिए।

तीन अवस्थाओं से गुजरती है दुनिया...

अतिरिक्त महासचिव राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन भाई ने कहा कि हर चीज़ अपनी तीन अवस्थाओं से गुजरती है- सतो, रजो और तमो। परमपिता ने जब दुनिया की स्थापना की थी, तब यह दुनिया स्वर्णिम दुनिया, स्वर्ग, सतयुग थी। अब वह पुरानी कलियुगी बन गई है। जो फिर से सतयुग की दुनिया परमात्मा स्थापन कर रहे हैं।

मुख्य तीन सत्ताएं होती हैं...

प्रशासक प्रभाग की राष्ट्रीय अध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी ने कहा कि प्रेरणादायक नेतृत्व, परमात्म शक्तियों और वरदानों से बनेगा। लीडर वही है जिसके प्रेरणादायक विचार और व्यक्तित्व होता है। नेता की पहचान इस बात से है कि आप करते क्या हैं, क्या कहते हैं और आप क्या हैं। राजनीतिक प्रभाग की मुख्यालय संयोजिका राजयोगिनी ब्र.कु. ऊषा दीदी ने देशभर से आए राजनेताओं का स्वागत किया। मैसूर से आए प्रभाग के सक्रिय सदस्य ब्र.कु. रंगनाथ भाई, ब्र.कु. ज्ञानेश्वरी बहन ने भी अपने विचार व्यक्त किए। मधुरवाणी ग्रुप के कलाकारों ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया।

ब्रह्माकुमारीज़ के विराट संत सम्मेलन में देश भर से जुटे साधु-संत

विश्व में सुख, शांति व सद्भाव लाने के लिए किया मंथन

राजिम-नवापारा(छ.ग.)। **गोवर्धनशरणजी महाराज, सिरगिट्टी आश्रम पांडुका जी** ने कहा कि एकज्योत है सब दीपों में, सारे जग का नूर एक है। सच कहता हूं दुनिया वालों, हाकिम और हुजूर एक है। गहराई में जाकर देखो, सब धर्मों का सार एक है। भक्तों का भगवान एक है। इसी संदेश को ब्रह्माकुमार भाई-बहनें, सभी संत समाज में पहुंचा रहे हैं। सबका उद्देश्य है सनातन आगे बढ़े। सनातन सुदृढ़ हो। वसुधैव कुटुम्बकम का भाव हम सबमें जागृत हो।

दूधाधारीमठ के महामंडलेश्वर महंत श्री रामसुंदर दास जी महाराज ने कहा कि आज बहुत ही सुखद अवसर है कि आध्यात्मिक चिंतन करने के लिए ब्रह्माकुमारीज़ के नवापारा आश्रम में हम सब उपस्थित हैं। इसके पीछे हम सबके कल्याण का भाव छिपा हुआ है। हमें मिलकर इसको प्रैक्टिकल प्रारूप देकर आगे बढ़ाना है।

धार्मिक प्रभाग के मुख्यालय संयोजक राजयोगी ब्र.कु. रामनाथ भाई ने कहा कि भारत में ही आदि सनातन धर्म रहा है। किन्तु आज आवश्यकता है आध्यात्मिकता की। भल हम भौतिक उन्नति कर रहे हैं लेकिन उसमें आध्यात्मिकता का समावेश हो तो संतुलित विकास होगा। जिसे प्राप्त करने के लिए राजयोग मेडिटेशन को जीवन का हिस्सा बनाने की ज़रूरत है। 24 घंटों में से आधा घंटा अपने लिए देने का भी उन्होंने आग्रह किया।

जोधपुर से आये महामंडलेश्वर डॉ. श्री शिवस्वरूपानंद जी ने कहा कि गीता विश्व का सर्वोत्तम ग्रंथ है। जिसमें भगवान की साक्षात वाणी है। मैं पिछले पांच-छह वर्षों से ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान से जुड़ा हुआ हूँ। उससे पहले हम लोगों के मन में भी बहुत सारी भ्रांतियां थीं। परन्तु यहाँ के राजयोग मेडिटेशन को जब मैंने समझा तो सारी भ्रांतियां समाप्त हो गईं।

संत सम्मेलन की झलकियां

- संतो ने किया ग्लोबल पीस हॉल का उद्घाटन
- निकली विशाल शोभायात्रा
- सुंदर सांस्कृतिक कार्यक्रम ने मोहा सबका मन
- बड़ी संख्या में संतों को सुनने पहुंचे श्रद्धालु

छत्तीसगढ़ योग-आयोग के अध्यक्ष ज्ञानेश शर्मा जी ने कहा कि ये केवल राजिम क्षेत्र के लिए नहीं बल्कि पूरे छत्तीसगढ़ के लिए बड़ी बात है। आगे भी ऐसे कार्यक्रम का आयोजन कर जागरूकता लाने की आशा जताई।

पूर्व कैबिनेट मंत्री व भाजपा विधायक बृजमोहन अग्रवाल ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ राजयोग के माध्यम से लोगों के जीवन में सुख-समृद्धि और सदाचार लाने का प्रयास कर रही है।

राजिम केन्द्र की संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. पुष्पा दीदी ने आये हुए सभी संतों का सम्मान किया। और सभी को मिलकर पुनः स्वर्णिम भारत बनाने की कामना की।

इंदौर ज़ोन की मुख्य संचालिका **राजयोगिनी ब्र.कु. आरती दीदी** ने भी अपने विचार रखे।

अयोध्या से आये आचार्य श्रीवत्स महाराज जी ने कहा कि कर्म की कुशलता ही योग है। अगर हम आध्यात्मिक हो जाएंगे तो अपने आप हमारे में परिवर्तन होगा। मेरे परिवर्तन को देखकर दूसरे भी आकर्षित होंगे।

विराट संत सम्मेलन के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए **ब्र.कु. नारायण भाई** ने कहा कि संत-महंत ने समाज को बांधे रखा है। आपस में एकसूत्र में पिरो कर सकारात्मक माहौल बनाना ये सम्मेलन का मूल उद्देश्य है।

मडेली से आए महा औघडेश्वर ज्योतिर्लिंग धाम के पीठाधीश श्री रुद्रानंद प्रचंडवेगनाथ महाराज ने कहा कि आज हम भौतिक जगत में अध्यात्म द्वारा संतुलन बनाकर ही सुख शांति को प्राप्त कर सकते हैं।

संचालन पटेल नगर दिल्ली से आईं **ब्र.कु. राजेश्वरी बहन** ने किया।

जो हर बात में जल्दबाजी करते हैं उनका तनाव 100 प्रतिशत बढ़ जाता है और कार्यक्षमता 60 प्रतिशत घट जाती है- डॉ. गुप्ता

नीमच-म.प्र.। जल्दी करो...जल्दी करो...टाइम नहीं है...बहुत बिज़ी हूँ.. बिल्कुल फुर्सत नहीं है... ऐसे जल्दबाजी करने वाले लोगों का तनाव 100 प्रतिशत बढ़ ही जाता है और 60 प्रतिशत कार्यक्षमता घट जाती है। इसलिए अपने शब्दकोष से ये शब्द डिलीट करना चाहिए। मैं बिज़ी हूँ...इसके बजाय यदि हम ये कहें कि बी.. ईज़ी.. तो मानसिक एकाग्रता में स्वतः वृद्धि हो जायेगी। उक्त विचार विश्व प्रसिद्ध मोटिवेशनल स्पीकर और इन्टरवेंशन कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. मोहित गुप्ता ने नीमच के अपने अल्प प्रवास पर ब्रह्माकुमारीज़ पावन धाम में आयोजित कार्यक्रम 'एन इवनिंग.. दैट विल चेंज योर लाइफ फॉरएवर' को संबोधित करते हुए व्यक्त किये। उन्होंने ये भी बताया कि हर कर्म का आधार संकल्प है, इसलिए हमें अपने संकल्पों का प्रबन्धन करना ही होगा। क्योंकि समस्या समाधान के दो ही तरीके हैं या तो परिस्थिति को बदल दो या अपनी स्वस्थिति को बदल लो। यदि आप खुद नहीं बदलेंगे तो आपके जीवन में भी परेशानियां खड़ी रहेंगी, कुछ नहीं बदलेगा। डॉ. गुप्ता ने आगे बताया कि जीवन एक यात्रा है। खुशी हमारी मंज़िल नहीं है बल्कि खुश रहकर हमें अपनी मंज़िल तक पहुंचना है। और पारिवारिक संबंधों में सुधार के लिए यह प्रैक्टिकल सुझाव दिया कि रोज़ शाम को 20 मिनट परिवार के साथ बैठकर ही भोजन करना है, केवल इस विधि से ही अनेक संबंध विच्छेद होने से बच गए। उन्होंने परिवार सबकी खुशी का आधार बताया कि एक-दूसरे की प्रशंसा करें, परिस्थिति को स्वीकार करें, मिलजुल कर समाधान करें। और हार्ट अटैक का प्रमुख कारण बताया कि आजकल अधिकतर हार्ट अटैक 20 से 35 वर्ष के युवाओं को हो रहे हैं। अचानक किसी परिवार की सारी व्यवस्थाएं छिन्न-भिन्न हो जाती हैं। इसका कारण लक्ष्य विहिनता, संबंधों में रूहानी प्रेम व खुशी की कमी ही प्रमुख है। युवा अपने हृदय में तनाव भरता जाता है, उसी का परिणाम हार्ट अटैक है।

- समस्या समाधान के दो ही तरीके हैं या परिस्थिति को बदल दो या अपनी स्वस्थिति को बदल लो
- खुशी हमारी मंज़िल नहीं है बल्कि खुश रहकर हमें अपनी मंज़िल तक पहुंचना है
- परिवार के साथ भोजन करने से सम्बन्ध सौहार्दपूर्ण बने रहेंगे

कार्यक्रम में न्यायपालिका, जिला प्रशासन, सी.आर.पी.एफ., नारकोटिक्स, ओपियम एण्ड एल्कोलाइड वर्क्स आदि के उच्च अधिकारी एवं शहर के आमंत्रित जनप्रतिनिधि तथा विभिन्न डाक्टर्स तथा समाजसेवी जन ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

मूल्य आधारित सेवा द्वारा समृद्ध समाज की पुनर्स्थापना विषय पर चार दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन

सकारात्मक सोच को स्थायीत्व देता ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान

छह हज़ार से अधिक समाजसेवी, रोटरी क्लब के पदाधिकारियों ने लिया भाग

शांतिवन। ब्रह्माकुमारीज़ में आकर अध्यात्म और राजयोग मेडिटेशन की शिक्षा लेकर मेरे विचारों में सकारात्मकता बढ़ गई। पहले की अपेक्षा गुस्सा शांत हो गया। जब से सुबह मेडिटेशन करना शुरू किया है तब से मन में असीम शांति की अनुभूति होती है। वाणी महाभारत करा देती है और यही वाणी मधुर संगीत बन जाती है।

उक्त उद्गार नई दिल्ली से आईं अनुसूचित जाति राष्ट्रीय आयोग की सदस्या डॉ. अंजू बाला ने ब्रह्माकुमारीज़ के शांतिवन परिसर स्थित डायमंड हॉल में आयोजित समाज सेवा प्रभाग के राष्ट्रीय सम्मेलन के शुभारंभ सत्र में व्यक्त किए।

उत्तराखंड से आईं भगवानपुर विधायक ममता राकेश ने कहा कि यहां आकर खुद को भाग्यशाली महसूस कर रही हूँ। ब्रह्माकुमारीज़ में चरित्र निर्माण की शिक्षा दी जा रही है, जिसकी आज समाज में बहुत ज़रूरत है।

संयुक्त मुख्य प्रशासिका और समाजसेवा प्रभाग की अध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी ने कहा कि जीवन में अगर सबकुछ है लेकिन संतुष्टता नहीं है तो सुखी रह नहीं सकते। राजयोग मेडिटेशन से संतुष्टता जैसे गुण पल्वित होते हैं। दिल्ली की ज़ोनल को-ऑर्डिनेटर राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी ने राजयोग मेडिटेशन से गहन शांति की अनुभूति कराई।

प्रभाग के उपाध्यक्ष,गुलबर्गा के राजयोगी ब्र.कु. प्रेम भाई ने कहा कि राजयोग से आत्म विश्वास आता है। साथ ही साथ समाज में सेवा करने का भाव पैदा होता है। भल भाषा आती हो या न आती हो किन्तु हृदय के भाव से समाज की सेवा करते हैं। महासचिव ब्र.कु. निर्वैर भाई, अतिरिक्त महासचिव ब्र.कु. बृजमोहन भाई ने भी अपने विचार व्यक्त किए।